एक शताब्दी की इंजीनियरिंग यात्रा

प्रथम विश्व युद्ध से
रॉयल चार्टर तक

द इंस्टीट्यूशन ऑफ इंजीनियर्स (इंडिया) — IEI

1914–1935 : भारतीय इंजीनियरिंग पेशे के संस्थागत विकास की ऐतिहासिक यात्रा

“भारत में इंजीनियरिंग की सभी शाखाओं के विज्ञान,
व्यवहार और व्यवसाय को प्रोत्साहित एवं उन्नत करना।”

संकलन एवं प्रस्तुति-
डॉ. भरत राज सिंह, एफ.आई.ई.
पूर्व अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश राज्य केंद्र, लखनऊ
द इंस्टीट्यूशन ऑफ इंजीनियर्स (इंडिया)
दिनांक : 09 सितम्बर 2026

युद्ध से निर्माण तक

प्रथम विश्व युद्ध (1914–1918) ने विश्व राजनीति के साथ-साथ भारत की औद्योगिक, तकनीकी और इंजीनियरिंग आवश्यकताओं को भी गहराई से प्रभावित किया। उस समय भारत ब्रिटिश शासन के अधीन था। युद्ध के दौरान भारतीय सैनिकों के साथ-साथ रेलवे, परिवहन, कार्यशालाओं, निर्माण, चिकित्सा, संचार और तकनीकी सेवाओं की महत्ता अत्यधिक बढ़ी। युद्ध के अनुभव ने यह स्पष्ट किया कि आधुनिक राष्ट्र की शक्ति केवल सैन्य क्षमता पर नहीं, बल्कि सक्षम इंजीनियरिंग, उद्योग, तकनीकी शिक्षा और प्रशिक्षित मानव संसाधन पर भी निर्भर करती है।

इसी व्यापक पृष्ठभूमि में भारत में एक ऐसे अखिल-भारतीय पेशेवर संगठन की आवश्यकता अनुभव की गई, जो इंजीनियरिंग की विभिन्न शाखाओं को एक साझा मंच दे सके। यही विचार आगे चलकर द इंस्टीट्यूशन ऑफ इंजिनियर्स (इंडिया) — IEI के गठन का आधार बना।

प्रथम विश्व युद्ध और भारतीय इंजीनियरिंग की नई भूमिका

1914 में युद्ध प्रारम्भ होने के समय भारत ब्रिटिश साम्राज्य का हिस्सा था। भारत ने युद्ध में मानवबल, संसाधन, परिवहन तथा तकनीकी सहायता के रूप में व्यापक योगदान दिया। भारतीय रेलवे और इंजीनियरिंग सेवाएँ सैनिकों, सामग्री और रसद की आवाजाही के लिए महत्वपूर्ण थीं। कार्यशालाओं तथा तकनीकी प्रतिष्ठानों में मरम्मत, निर्माण और रख-रखाव का कार्य भी बढ़ा।

युद्ध के बाद भारत में औद्योगिकीकरण और तकनीकी विकास को लेकर नई सोच विकसित हुई। भारतीय औद्योगिक आयोग (1916–1918) की रिपोर्ट ने इंजीनियरिंग शिक्षा और उद्योग के विकास तथा एक सशक्त इंजीनियरिंग पेशे की आवश्यकता पर बल दिया। IEI के इतिहास में इस आयोग और युद्ध के अनुभव को संस्था की पृष्ठभूमि का महत्वपूर्ण भाग माना गया है।

1918–1920 : एक अखिल भारतीय इंजीनियरिंग संस्था का विचार

बीसवीं शताब्दी के दूसरे दशक में भारतीय इंजीनियरों के बीच ऐसी पेशेवर संस्था बनाने के प्रयास तेज हुए, जिसमें विभिन्न इंजीनियरिंग शाखाओं के विशेषज्ञ सम्मिलित हो सकें। 1918–19 के दौरान प्रस्तावों और विचार-विमर्श का क्रम आगे बढ़ा और अंततः 'द इंस्टीट्यूशन ऑफ इंजीनियर्स (इंडिया)' का गठन हुआ।

13 सितम्बर 1920 : औपचारिक पंजीकरण

द इंस्टीट्यूशन ऑफ इंजिनियर्स (इंडिया) का औपचारिक पंजीकरण 13 सितम्बर 1920 को तत्कालीन मद्रास में Indian Companies Act, 1913 के अंतर्गत हुआ। यह वह निर्णायक क्षण था जब भारत में विभिन्न इंजीनियरिंग शाखाओं को एक राष्ट्रीय पेशेवर मंच प्रदान करने की दिशा में संस्थागत कदम उठाया गया।

23 फरवरी 1921 : ऐतिहासिक उद्घाटन

23 फरवरी 1921 को कलकत्ता स्थित Asiatic Society of Bengal में संस्था का औपचारिक उद्घाटन तत्कालीन वायसराय एवं भारत के गवर्नर-जनरल लॉर्ड चेम्सफोर्ड ने किया। इसी अवसर पर प्रथम तकनीकी गतिविधियों का भी प्रारम्भ हुआ। यह आयोजन IEI के संस्थागत जीवन का महत्वपूर्ण मील का पत्थर बना।

1920 से 1935 : पेशेवर पहचान से राष्ट्रीय संस्था तक

अगले पन्द्रह वर्षों में IEI ने इंजीनियरों के लिए तकनीकी विचार-विनिमय, व्याख्यान, शोध, प्रकाशन, शिक्षा तथा पेशेवर मानकों के विकास की दिशा में अपनी भूमिका मजबूत की। संस्था का उद्देश्य केवल सदस्यता प्रदान करना नहीं था, बल्कि भारत में इंजीनियरिंग ज्ञान के प्रसार और उसके व्यावहारिक उपयोग को आगे बढ़ाना था।

रॉयल चार्टर की ओर

1935 तक IEI एक स्थापित राष्ट्रीय पेशेवर संस्था बन चुकी थी। संस्था के तत्कालीन अध्यक्ष सर थॉमस गुथरी रसेल तथा अन्य सदस्यों ने ब्रिटिश सम्राट के समक्ष संस्था को Royal Charter of Incorporation प्रदान करने के लिए याचिका प्रस्तुत की। 21 फरवरी 1935 के आदेश द्वारा याचिका को His Majesty's Privy Council की समिति के विचारार्थ भेजा गया। 1 अगस्त 1935 की समिति की रिपोर्ट में Charter प्रदान करने की अनुशंसा की गई।

13 अगस्त 1935 : बकिंघम पैलेस में चार्टर

मूल Royal Charter के अभिलेख में 13 अगस्त 1935 को Buckingham Palace में King George V की Council के समक्ष Charter की प्रक्रिया दर्ज है। Charter में संस्था को एक 'Body Corporate and Politic' के रूप में स्थापित किया गया और उसे स्थायी उत्तराधिकार तथा विधिक पहचान प्रदान की गई।

9 सितम्बर 1935 : रॉयल चार्टर का ऐतिहासिक दिवस

IEI के आधिकारिक इतिहास में 9 सितम्बर 1935 को Royal Charter द्वारा संस्था के incorporation की तिथि के रूप में स्मरण किया जाता है। इसी कारण प्रत्येक वर्ष 9 सितम्बर को Royal Charter Day मनाया जाता है। यह भारतीय इंजीनियरिंग पेशे के इतिहास में एक विशिष्ट उपलब्धि थी।

रॉयल चार्टर का मूल उद्देश्य

Royal Charter के Clause 2 ने संस्था के मूल उद्देश्यों को स्पष्ट रूप से परिभाषित किया। इसका केंद्रीय उद्देश्य था—भारत में इंजीनियरिंग की सभी शाखाओं के विज्ञान, व्यवहार और व्यवसाय को प्रोत्साहित एवं उन्नत करना। इसके अतिरिक्त स्थानीय संस्थाओं को बढ़ावा देना, तकनीकी जानकारी का प्रसार, व्याख्यान एवं सम्मेलन आयोजित करना, प्रकाशन और शोध को प्रोत्साहित करना तथा इंजीनियरिंग शिक्षा के विकास में सहायता करना भी इसके उद्देश्यों में शामिल था।

क्या रॉयल चार्टर प्रथम विश्व युद्ध का 'पुरस्कार' था?

ऐतिहासिक दृष्टि से यह कहना उचित नहीं होगा कि Royal Charter प्रथम विश्व युद्ध में भारतीय इंजीनियरों या तकनीशियनों को दिए गए किसी प्रत्यक्ष पुरस्कार के रूप में प्रदान किया गया था। उपलब्ध मूल Charter में ऐसा कोई प्रावधान नहीं है। अधिक सटीक ऐतिहासिक व्याख्या यह है कि प्रथम विश्व युद्ध और उसके अनुभवों ने भारत की औद्योगिक तथा इंजीनियरिंग आवश्यकताओं को स्पष्ट किया; भारतीय औद्योगिक आयोग और युद्धोत्तर औद्योगिक विकास ने एक संगठित इंजीनियरिंग पेशे की आवश्यकता को बल दिया; 1920 में IEI का गठन हुआ और लगभग पन्द्रह वर्षों के संस्थागत विकास के बाद 1935 में संस्था ने Royal Charter प्राप्त किया।

ऐतिहासिक समयरेखा : 1914–1935

वर्ष / तिथि	ऐतिहासिक घटना
1914–1918	प्रथम विश्व युद्ध; भारत से सैनिक, परिवहन, तकनीकी एवं औद्योगिक सहायता।
1916–1918	Indian Industrial Commission का कार्य; इंजीनियरिंग शिक्षा एवं उद्योग के विकास पर बल।
1918–1919	अखिल भारतीय इंजीनियरिंग पेशेवर संस्था की दिशा में प्रस्ताव और विचार-विमर्श।
13 सितम्बर 1920	IEI का मद्रास में Indian Companies Act, 1913 के अंतर्गत पंजीकरण।
23 फरवरी 1921	कलकत्ता के Asiatic Society of Bengal में Lord Chelmsford द्वारा औपचारिक उद्घाटन।
21 फरवरी 1935	Royal Charter के लिए प्रस्तुत याचिका को Privy Council को संदर्भित किया गया।
1 अगस्त 1935	Privy Council समिति ने Charter प्रदान करने की अनुशंसा की।
13 अगस्त 1935	Buckingham Palace में Charter की स्वीकृति की प्रक्रिया दर्ज हुई।
9 सितम्बर 1935	IEI का Royal Charter द्वारा incorporation; आज Royal Charter Day के रूप में स्मरण।

रॉयल चार्टर : एक संस्थागत परिवर्तन

Royal Charter ने IEI को केवल एक पंजीकृत संस्था के रूप में नहीं, बल्कि एक विशिष्ट corporate identity प्रदान की। इसके माध्यम से संस्था को अपने नाम से निरंतर अस्तित्व, common seal तथा विधिक अधिकार प्राप्त हुए। इसने भारत में इंजीनियरिंग पेशे के संगठनात्मक विकास को एक मजबूत संवैधानिक और ऐतिहासिक आधार दिया।

युद्ध से राष्ट्र-निर्माण तक : विरासत

IEI की कहानी को केवल 1935 के Royal Charter तक सीमित नहीं किया जा सकता। इसकी जड़ें उस दौर में दिखाई देती हैं जब युद्ध, औद्योगिकीकरण और तकनीकी आवश्यकताओं ने भारत में इंजीनियरिंग की भूमिका को नई दिशा दी। 1920 का गठन उस विचार का संस्थागत रूप था और 1935 का Royal Charter उसकी परिपक्वता और औपचारिक मान्यता का प्रतीक बना।

स्वतंत्रता के बाद भी IEI का corporate status बना रहा और संस्था ने भारत के इंजीनियरिंग समुदाय के लिए राष्ट्रीय पेशेवर मंच के रूप में अपनी भूमिका जारी रखी। इस प्रकार 1914–1935 की यात्रा भारतीय इंजीनियरिंग के संस्थागत इतिहास में एक महत्वपूर्ण अध्याय है।

स्रोत एवं संदर्भ

- द इंस्टीट्यूशन ऑफ इंजीनियर्स (इंडिया), मूल Royal Charter, Buckingham Palace, 13 अगस्त 1935।
- द इंस्टीट्यूशन ऑफ इंजीनियर्स (इंडिया), Guide Book / आधिकारिक ऐतिहासिक सामग्री।
- IEI उत्तर प्रदेश केन्द्र — संस्था का इतिहास एवं First World War तथा Indian Industrial Commission से संबंधित विवरण।
- IEI इतिहास सामग्री — 1920 में गठन, 1921 में उद्घाटन और 1935 के Royal Charter का विवरण।

विशेष टिप्पणी

यह दस्तावेज़ ऐतिहासिक तथ्यों को उपलब्ध IEI के आधिकारिक अभिलेखों के आधार पर संक्षिप्त, कॉफी-टेबल शैली में प्रस्तुत करता है। प्रथम विश्व युद्ध और Royal Charter के बीच संबंध को प्रत्यक्ष 'पुरस्कार' के बजाय ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और संस्थागत विकास के क्रम के रूप में प्रस्तुत किया गया है।